शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ४० : नई दिल्ली : ६-१२ जनवरी २०१३

विज्ञप्ति के पाठकों, सहयोगियों और शुभचिंतकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सानंद बाड़मेर संभाग में विचरण कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। नववर्ष के अवसर पर पूज्यप्रवर से मंगलपाठ सुनने के लिए बाड़मेर में जन-ज्वार उमड़ पड़ा। देश के प्रायः सभी संभागों से समागत श्रद्धालुओं ने इस अवसर पर परमपूज्यश्री के दर्शन किए। बाड़मेर से अब आपका टापरा की ओर विहार हो गया है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण टापरा की ओर

२६ दिसम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः कवास से ११ किमी. का विहार कर उत्तरलाई पधारे। बाड़मेर के निकटवर्ती इस क्षेत्र में तेल स्रोतों की खोज न केवल इस क्षेत्र के लिए, अपितु संपूर्ण राजस्थान के लिए वरदान सिद्ध हो रहा है। मार्ग के परिपार्श्व में तेल के कुओं की खुदाई और उसके लिए लगाए जा रहे विशालकाय संयंत्र यात्रियों का ध्यान अनायास ही अपने ओर आकर्षित करते हैं। भारतीय वायुसेना की पश्चिमी कमान का हवाई अड्डा भी उत्तरलाई को एक विशेष पहचान दिए हुए है। उत्तरलाई में आचार्यवर का प्रवास श्री लूणाराम माली के निवास पर हुआ। बताया गया कि परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ के प्रवास का सौभाग्य भी इस परिवार को प्राप्त हुआ था। पूरा माली परिवार पूज्यवर के इस अनुग्रह से उल्लसित और हर्षित था।

घर में उतरे स्वर्ग

प्रातःकालीन कार्यक्रम में माली परिवार की बहनों ने भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया। गीत की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं--

सतगुरु सा म्हानै प्रेम प्यालो पायो रे।
दयालु दाता अमृत प्यालो पायो रे।।

श्री लूणाराम माली और डा.यशवंत मायला ने पूज्यवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जो अपने भीतर रहता है, राग-द्वेष से मुक्त रहता है और त्यागमय जीवन जीता है, उसे सुख मिल सकता है। त्याग, संयम और समता के अभाव में जीवन दुःखी बन सकता है। हिंसा, झूठ, बेईमानी आदि से यथासंभव बचने का संकल्प होता है तो जीवन में शान्ति का संचार हो सकता है।'

पूज्य आचार्यवर ने पारिवारिक सौहार्द की प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'हर व्यक्ति को विवाद से बचने का प्रयास करना चाहिए। जहां विवाद होता है, वहां वातावरण अशान्त बन सकता है। क्रोध में आकर बोलना और बातचीत बन्द कर देना, दोनों ही गलत हैं। परस्पर में सहनशीलता रहनी चाहिए।

छोटे विनम्र रहें तो बड़ों को भी झुकना होता है। छोटों को वात्सल्य देना और उनकी भूल पर डांटना, दोनों अपेक्षित होते हैं। सौ बार वात्सल्य दिया जाए तो दो-चार बार की डांट-फटकार बच्चों को इतनी बुरी नहीं लग सकेगी। परिवारों में गुस्सा नहीं, पवित्र मैत्रीभाव रहे तो पारस्परिक सौहार्द रह सकता है। यदि स्वार्थ हावी हो जाता है तो परिवार में प्रेम कितना रह पाएगा? पारस्परिक हित चिंतन के बिना संबंध नीरस बन सकते हैं। जिस परिवार में न्याय नहीं, प्रेम नहीं, परस्परता नहीं, बल्कि स्वार्थ है, वह परिवार नरकतुल्य बन सकता है। परिवार में स्वार्थ का त्याग, पवित्र मैत्रीभाव और सत्संस्कार हैं तथा प्राथमिक आवश्यकताओं की संपूर्ति सम्यकतया होती है तो घर में स्वर्ग उतर सकता है।'

पूज्य आचार्यवर ने आज शुक्ला त्रयोदशी होने से प्रायः सभी साधु-साध्वियों की उपस्थिति में हाजरी का वाचन करते हुए मर्यादाओं के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा प्रदान की, तत्पश्चात बालमुनि विवेककुमारजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया। पूज्यवर ने उन्हें प्रोत्साहनस्वरूप इक्कीस कल्याणक बक्सीस किए। साधु-साध्वियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया।

बाड़मेर में भव्य स्वागत

२७ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः बाड़मेर की ओर प्रस्थान किया। इससे पूर्व आचार्यप्रवर ने सोलंकी परिवार के कतिपय घरों का स्पर्श किया। दस वर्ष की लंबी प्रतीक्षा के बाद पूज्यवर के पदार्पण से बाड़मेरवासी अतिशय उल्लसित थे। ज्यों-ज्यों शहर निकट आता जा रहा था, श्रद्धालुओं का उत्साह भी वृद्धिंगत होता जा रहा था। न केवल तेरापंथ समाज, अपितु इतर जैन समाज के भी हजारों लोगों ने पलक-पांवड़े बिछाकर आचार्यवर का भावपूर्ण स्वागत किया। क्षेत्रीय विधायक श्री मेवाराम जैन, नगर परिषद सभापति श्रीमती उषा जैन आदि के नेतृत्व में बाड़मेर के गणमान्य लोगों ने पूज्यवर की अगवानी की।

भव्य स्वागत जुलूस किसान छात्रावास, रेलवे स्टेशन, स्टेशन रोड, जैन छात्रावास, गांधी चौक, सदर बाजार, लक्ष्मी बाजार, जवाहर चौक, पीपली चौक, साधना भवन व प्रतापजी की पोल होते हुए तेरापंथ भवन पहुंचकर विशाल स्वागत सभा के रूप में परिणत हो गया। बाड़मेर में पूज्यवर का छहदिवसीय प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल एवं कन्यामंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। जैन श्रीसंघ बाड़मेर के अध्यक्ष श्री नैनमल जैन और नाकोड़ा ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अमृतलाल छाजेड़ ने पूज्यवर के स्वागत में अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। तेयुप के सदस्यों ने गीत के माध्यम से अपने आराध्य का स्वागत किया। बाड़मेर की साध्वी पुण्यप्रभाजी, साध्वी दर्शनप्रभाजी, साध्वी निर्मलप्रभाजी व समणी मुकुलप्रज्ञाजी ने अपनी जन्मभूमि पर पूज्यप्रवर की अभिवंदना की। साध्वी मार्दवश्रीजी द्वारा प्रेषित कविता को साध्वी निर्मलप्रभाजी ने प्रस्तुति दी। शासनश्री मुनि हर्षलालजी के साथ गत चतुर्मास बाड़मेर में करने वाले मधुर संगायक मुनि राजकुमारजी ने अपने श्रद्धासिक्त भावों को व्यक्त किया।

जोधपुर नगर निगम के कमिश्नर श्री ओमप्रकाश जैन ने श्रद्धाभिव्यक्ति की। श्री कैलाश बोहरा ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित सांसद श्री हरीश चौधरी ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए कहा--'आपके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने से वर्तमान की समस्याओं का समाधान हो सकता है।' विधायक श्री मेवाराम जैन ने कहा--'आपका आगमन बाड़मेर के लिए सौभाग्य का सूचक है। यह हमारे क्षेत्र के विकास के नए द्वार उद्घाटित करेगा।' बाड़मेर नगर परिषद की सभापति श्रीमती उषा जैन ने कहा--'आज संपूर्ण बाड़मेर महातपस्वी आचार्यश्री की साधना से सुवासित हो रहा है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अहिंसा एक ऐसी माता है, जो सभी प्राणियों के लिए कल्याणकारी है। जो अहिंसा की साधना करता है, वह कल्याण को प्राप्त होता है। व्यक्ति का जीवन-व्यवहार अहिंसा से अनुप्राणित रहना चाहिए। वह संकल्पजा हिंसा से बचने का प्रयास करे। अहिंसा और मैत्री के द्वारा हम अपने मन को मन्दिर बनाएं। प्रभु का स्मरण करते हुए मन की चंचलता व मलिनता को दूर करने का प्रयास करें। व्यक्ति कायिक, वाचिक और मानसिक हिंसा से दूर रहता हुआ अपने कल्याण का पथ प्रशस्त कर लेता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'राजनीति जनता की सेवा का एक माध्यम है। इसमें नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा रहे, यह काम्य है। जनता के व्यवहार में अहिंसा की देवी और बाजार में नैतिकता की देवी प्रतिष्ठित हो तो परिवार, समाज और राष्ट्र उत्थान को प्राप्त हो सकता है।

आज हम बाड़मेर आए हैं। साध्वी पुण्यप्रभाजी, साध्वी दर्शनप्रभाजी, साध्वी संयमलताजी, साध्वी निर्मलप्रभाजी, साध्वी मार्दवश्री, साध्वी मंजुलाश्रीजी और समणी मुकुलप्रज्ञाजी यहीं की हैं। ये सभी अच्छा विकास करती हुई धर्मसंघ की सेवा करती रहें।'

कार्यक्रम में श्री भूरचन्द जैन ने 'बाड़मेर जिला और तेरापंथ' नामक नवीन कृति पूज्यवर को उपहृत की। श्री केवलचन्द मेहता ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। आज मध्याह्न में आचार्यवर की मंगल सन्निधि में प्रेस कान्फ्रेंस समायोजित हुई, जिसमें पत्रकारों के विविध विषयक प्रश्नों को परमाराध्य आचार्यवर ने समाधान प्रदान किए।

महावीर का उपदेश आज भी प्रासंगिक

२८ दिसम्बर। बाड़मेर प्रवास का द्वितीय दिन। प्रातःकालीन कार्यक्रम का विषय था---आज के युग में महावीर की उपयोगिता।' मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'भगवान महावीर त्रिकालदर्शी थे। उन्होंने त्याग, संयम व समन्वय का सन्देश दिया। उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों की उपयोगिता सार्वकालिक है। हम उनकी वाणी को जीवन में उतारें तथा उनके सिद्धान्तों पर चलने का प्रयास करें, तभी सही अर्थों में हम उनके अनुयायी बन पाएंगे।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'भगवान महावीर की उपयोगिता को सिद्ध करने वाले अनेक सूत्र हैं, जो उन्होंने लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व दिए। उनमें सार्थक सचाई है और वे आज की जागतिक समस्याओं का समाधान बन सकते हैं। भगवान महावीर ने जनता को जीने का मार्ग बताया। यदि उनके द्वारा प्रदत्त कुछ सूत्रों को आत्मगत कर लें तो हम शाश्वत सुख को प्राप्त कर सकते हैं।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आर्हत वाङ्मय में दो महत्त्वपूर्ण शब्द प्राप्त होते हैं--महाव्रत और अणुव्रत। दोनों ही व्रत हैं, किन्तु इनमें महाव्रत विशिष्ट होता है। इसकी साधना करने वाले साधक विरल होते हैं। अणुव्रत मध्यम मार्ग है। इसकी साधना कुछ आसानी से की जा सकती है। यदि आज के युग में भगवान महावीर द्वारा और जैन वाङ्मय में बताए गए इन व्रतों की उपयोगिता है तो भगवान महावीर की भी उपयोगिता है।'

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'बारह व्रतों में एक है स्वदार संतोष व्रत। यह व्रत जीवन में नहीं होता है तो बलात्कार और व्यभिचार जैसी घटनाएं सामने आती हैं। यदि यह व्रत जीवन में आ जाए तो अनेक विसंगतियों को जन्म लेने का अवसर ही नहीं मिलता। समाज व्यवस्था की दृष्टि से यदि आज इस व्रत की उपयोगिता है तो भगवान महावीर की भी उपयोगिता है।

बारह व्रतों में पांचवां व्रत है--इच्छा परिमाण व्रत। यदि यह व्रत जीवन में आ जाए तो वर्तमान

की अनेक समस्याएं स्वतः समाहित हो सकती हैं। गृहस्थ के लिए अर्थ आवश्यक होता है, किन्तु असीमित इच्छाएं अनेक समस्याओं की सर्जक बन सकती हैं। इसलिए इच्छाओं को सीमित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। यदि आज इच्छा परिमाण व्रत की उपयोगिता है तो भगवान महावीर की भी उपयोगिता है। बारह व्रतों में एक और व्रत है--भोगोपभोग परिमाण व्रत। यदि जीवन में थोड़े पदार्थों के उपभोग से काम चल सकता है तो व्यर्थ असंयम क्यों करें? यदि आज उपभोग के संयम की उपयोगिता है तो भगवान महावीर की भी उपयोगिता है। अनेकान्त सिद्धान्त द्वारा अनेक समस्याएं समाहित हो सकती हैं। यदि आज अनेकान्त सिद्धान्त की उपयोगिता है तो भगवान महावीर की भी उपयोगिता है।

अध्यात्म की दृष्टि से भगवान महावीर से बढ़कर दुनिया में कोई महापुरुष नहीं है। उन्होंने जनता को सत्पथ दिखाया था। उनके द्वारा दिखाए गए पथ पर चलकर व्यक्ति कल्याण को प्राप्त कर सकता है, अपने जीवन को सार्थक बना सकता है।'

कार्यक्रम में प्रतापगढ़ से समागत लगभग २५० छात्राओं की ओर से जोधपुर नगर निगम कमिश्नर श्री ओमप्रकाश ने विचाराभिव्यक्ति की तथा नशामुक्ति के २७००० संकल्प पत्र भेंट किए। स्थानीय अणुव्रत समिति द्वारा नशामुक्ति के १२०० संकल्पपत्र भेंट किए गए।

समझें जैनधर्म के सिद्धान्तों को

२९ दिसम्बर। आज के प्रातःकालीन कार्यक्रम का विषय था--जैनधर्म के सिद्धान्त। परमाराध्य आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व निर्धारित विषय पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मंत्री मुनिश्री के वक्तव्य हुए। मुनि योगेशकुमारजी ने भी विचाराभिव्यक्ति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जैनधर्म वीतराग भगवान द्वारा प्रतिपादित धर्म है। जैनधर्म के सारे सिद्धान्त नवतत्त्वों में समाविष्ट हो जाते हैं। इन नवतत्त्वों के आधार पर अनेक ग्रंथों का निर्माण किया जा सकता है तथा इनके आधार पर जैनधर्म को बहुत सुन्दर तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है। नवतत्त्वों में जीव-अजीव को छोड़कर शेष सात तत्त्वों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। एक बंध का परिवार और दूसरा मोक्ष का परिवार। पुण्य-पाप तथा आश्रव बंध का और संवर तथा निर्जरा मोक्ष का परिवार है। कर्मवाद जैन दर्शन का महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। सुख-दुःख का कर्ता स्वयं हमारी आत्मा है। व्यक्ति जैसी प्रवृत्ति या आचरण करता है, उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है। जैन धर्म के अनुयायी जैन सिद्धान्तों को समझें तथा अपने जीवन में सदाचरण के विकास का प्रयास करें।'

पूज्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान के उपाध्यक्ष श्री मुकनचन्द मेहता ने संस्थान द्वारा प्रकाशित सन २०१३ का कैलेण्डर तथा अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रकाशित कैलेण्डर अध्यक्ष श्री बाबूलाल गोलछा ने पूज्यवर को उपहृत किया।

संतत्त्व झलकता है आपके व्यक्तित्व में

३० दिसम्बर। प्रातः तेरापंथ भवन से लगभग छह किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर राष्ट्रीय राजमार्ग नं.१५ पर स्थित कुशल वाटिका में पधारे। एक दिन पूर्व खरतरगच्छ मूर्तिपूजक सम्प्रदाय की साध्वी डा. विद्युतप्रभाजी पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आई थीं। उनके विशेष निवेदन पर आचार्यवर ने कुशल वाटिका में पधारने की स्वीकृति प्रदान की थी। वाटिका से आगे मूर्तिपूजक साध्वियों ने आचार्यवर का स्वागत किया। पूज्यप्रवर परिसर में स्थित मुख्य कार्यालय में पधारे।

कार्यालय के हॉल में आयोजित कार्यक्रम में साध्वी विद्युतप्रभाजी ने आचार्यवर का स्वागत एवं

अभिनंदन करते हुए कहा--'आचार्य भगवंत के यहां पदार्पण से मुझे सात्विक प्रसन्नता हो रही है। आप प्रभावशाली और महान आचार्य हैं, यह इतना महत्त्वपूर्ण नहीं, महत्त्वपूर्ण यह है कि आपके व्यक्तित्व की विराटता में संतत्त्व झलक रहा है। हमारे समुदाय में अपना गहरा प्रभाव रखने वाले मेरे भ्राता मुनि मणिप्रभसागरजी मेरी बात को सहजता से स्वीकार कर लेते हैं। उन्हीं की भांति आपश्री मेरे निवेदन को स्वीकार कर यहां इतनी दूर पधारे, इसके लिए मैं हृदय की संवेदनाओं एवं भावनाओं के साथ आपकी अभिवंदना करती हूं।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'दुनिया में मंगल की कामना के साथ कुछ पदार्थ भी उपयोग और उपभोग में लिए जाते हैं। आर्हत वाङ्मय में धर्म को सबसे बड़ा मंगल माना गया है। अहिंसा, संयम व तप धर्म है। सबके मन में अनुकंपा का भाव हो, किसी को भी कष्ट न दिया जाए।' पूज्यवर ने साध्वी विद्युतप्रभाजी की मिलनसारिता को विशिष्ट बताते हुए कहा--'साध्वीजी की भावना को स्वीकार कर हम कुशल वाटिका में आए हैं। जैन विश्वभारती गुरुदेव तुलसी की आध्यात्मिक प्रेरणा से स्थापित हुई। मान्य विश्वविद्यालय जैन विद्या व शिक्षा, साधना और शोध के क्षेत्र में अच्छा कार्य कर रहा है।'

कार्यक्रम में मुनि दिनेशकुमारजी का वक्तव्य हुआ। जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी ने विश्वविद्यालय के विभिन्न शैक्षणिक प्रकल्पों की अवगति देते हुए कहा--'वर्तमान में छह हजार परीक्षार्थी विभिन्न संकायों में पत्राचार परीक्षा दे रहे हैं। अनेकानेक जैन साधु-साध्वियां पत्राचार माध्यम से परीक्षा दे रहे हैं तो कई पी.एच.डी.कर रहे हैं।' उल्लेखनीय है--वाटिका में उपस्थित कई मूर्तिपूजक साध्वियों ने जैविभा संस्थान से एम.ए. किया है और एक साध्वी पी.एच. डी. में संलग्न है।

कार्यक्रम के बाद आचार्यवर ने परिसर में भ्रमण किया और वहां चल रही एवं विचाराधीन प्रवृत्तियों के बारे में अवगति प्राप्त की। जिनकुशलसूरि सेवाश्रम ट्रस्ट द्वारा संचालित इस परिसर में अनेक भवन निर्मित हैं। परिसर के बाहर मूर्तिपूजक साध्वियों तथा ट्रस्ट के मंत्री श्री रतनलाल संकलेचा सहित पदाधिकारियों ने आभार ज्ञापित किया। वहां से आचार्यप्रवर पुनः लगभग ११.१५ बजे तेरापंथ भवन पधार गए। प्रवास में भी आज तेरह किमी. का पूरा विहार जैसा हो गया।

मुखर हो जैनत्व

आचार्यवर के कुशल वाटिका पदार्पण से कार्यक्रम का पूर्वार्द्ध महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी की सन्निधि में आयोजित हुआ। 'जैनों में जैनत्व मुखर हो' विषयक इस कार्यक्रम में साध्वियों ने गीत का संगान किया। गुरुदेव तुलसी द्वारा विरचित 'जैन जीवनशैली' गीत को साध्वी चारित्रयशाजी एवं साध्वी भव्ययशाजी ने प्रस्तुति दी। साध्वी उन्नतयशाजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'भगवान महावीर के समय बारहव्रती श्रावक होते थे और आज भी बनते हैं। उससे पूर्व वे सुलभबोधि व सम्यक्त्वी की भूमिका में आ जाते हैं। श्रावक वे होते हैं, जो तत्त्वज्ञ होते हैं, जीव-अजीव आदि नौ तत्त्वों के ज्ञाता होते हैं, जो अपने भीतर में जीते हैं। श्रावक के जीवन में सादगी, संयम, सम्यक् दृष्टिकोण तथा सामायिक आदि उपासना का समावेश होना चाहिए। इससे श्रावकत्व व जैनत्व मुखर होगा।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'व्यक्ति की जीवनशैली में उसका व्यक्तित्व प्रतिबिंबित होता है। जीवनशैली पीसफुल (शांतिपूर्ण) हो। मनुष्य शान्ति पाना चाहता है और उसके लिए वह अनेकविध प्रयत्न भी करता है। शान्ति स्थिरता से आती है। दौड़भाग व प्रतिस्पर्धा

के इस युग में शान्ति की प्राप्ति कठिन होती जा रही है। व्यक्ति की जीवनशैली परपजफुल (उद्देश्यपूर्ण) प्रोडक्टिवफुल (रचनात्मक) एवं प्रोग्रेसिवफुल (विकासोन्मुख) हो।' महाश्रमणीजी ने आगे कहा--'व्यावहारिक दृष्टि से भी जैनत्व प्रकट होना चाहिए। प्रत्येक जैन को अपने नाम के साथ जैन लगाना चाहिए और परस्पर अभिवादन में 'जय जिनेन्द्र' बोला जाना चाहिए। मोबाइल रिंगटोन में नमस्कार महामंत्र की रिंगटोन हो। पारिवारिक उपक्रमों में जैन संस्कार विधि का प्रचलन हो और सांस्कृतिक संक्रमण से यथासंभव बचने का प्रयास हो।' महाश्रमणीजी ने इस संदर्भ में नौ आयामी जैन जीवनशैली का विशद विवेचन किया।

कुशल वाटिका से आचार्यवर लगभग ११.३० बजे प्रवचन स्थल पर पधारे। अपने मंगल प्रवचन में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'जैन धर्म का आधार है--वीतरागता। वीतराग अपने आपमें कृतार्थ हो जाते हैं। राग-द्वेष को क्षीण करना साधना की अन्तिम परिणति है। जैन वह होता है, जिसका आराध्य जिन होता है। जिन शासन का प्रसिद्ध मंत्र है--नमस्कार महामंत्र। इसे बहुत बड़ा माहात्म्य और सम्मान प्राप्त है। जैन इस महामंत्र को धारण करने वाले होने चाहिए। यह परम पवित्र व असाम्प्रदायिक मंत्र है। इसमें किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है। नमस्कार महामंत्र जैनों में जैनत्व मुखर कराने वाला मंत्र है।' आचार्यवर ने आगे कहा--'व्यावसायिक प्रतिष्ठानों और घरों में भगवान महावीर, नमस्कार महामंत्र व आचार्यों के फोटो आदि रहें तो जैनत्व मुखर हो सकता है। जैन लोगों का खानपान शुद्ध हो, वे नशामुक्त हों। जैन लोग धोखाधड़ी और घोटालों से बचने का प्रयास करें। प्रामाणिकता में उनकी निष्ठा हो, अनेकान्त दर्शन का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग हो। इन सूत्रों से जैनत्व मुखर हो सकता है।'

मध्याह्न में पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में नगर के वकील, डॉक्टर आदि प्रबुद्धजनों की अणुव्रत संगोष्ठी आयोजित हुई। स्थानीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री मुकेश जैन ने स्वागत भाषण किया। श्री मेवाराम जैन व श्री पारस गोलेच्छा ने अपने विचार रखे। मुनि उदितकुमारजी, मुनि जम्बूकुमारजी (मिंजूर) ने अणुव्रत के सन्दर्भ में अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'अणुव्रत के द्वारा व्यावहारिक जीवन को समीचीन बनाया जा सकता है। अणुव्रत प्रामाणिकता व संयम को जीवन में प्रतिष्ठित करने वाला आन्दोलन है। एक वकील का धर्म है कि वह अपने तर्कों के द्वारा न्याय को स्थापित करने का प्रयास करे। डॉक्टर का काम है रोगी को लाभ पहुंचाना। पैसा कमाना उसके लिए नम्बर दो पर है। बुद्धि जीवन की बड़ी उपलब्धि है, उसका उपयोग रचनात्मक कार्यों में हो। व्यक्ति की प्रामाणिकता व नैतिकता में निष्ठा बनी रहे, यह अपेक्षित है।'

अभिवृद्धि हो पारस्परिक सौहार्द में

३१ दिसम्बर। प्रातःकालीन कार्यक्रम का विषय था--जैन एकता के मानक तत्त्व। मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'आवाज एक होती है तो उसकी ताकत बढ़ जाती है। जिस संस्था या संगठन में एकता है, उसका रूप अलग ही होता है। जैन लोग अपनी-अपनी गुरु-परंपरा को निभाते हुए भी जैन एकता को पुष्ट करें, यह काम्य है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'भारत अपनी सांस्कृतिक व आध्यात्मिक विरासत के कारण विशिष्ट है। यहां सभी धर्मावलम्बी या मतावलंबी अपनी मान्यता के आधार पर आराधना करने के लिए स्वतंत्र हैं। जैनधर्म का अनेकान्त सिद्धान्त भिन्नता में एकता स्थापित करने वाला सिद्धान्त है। अनेकान्त के संदर्भ में एकता के मानकों को खोजा जाए। हमारे आराध्य एक हैं,

हमारा मंत्र एक है, ध्वज व ग्रंथ एक है। अपनी-अपनी परंपरागत आस्था पर स्थिर रहकर भी परस्पर प्रमोद भावना से जैन एकता में प्रगति संभव है। एकता में ही प्रगति निहित है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति अपनी सुरक्षा का प्रयास करता है। देश की सीमा पर जागरूकता रखी जाती है, जिससे राष्ट्र को खतरा उत्पन्न न हो। यह अपेक्षित है। शारीरिक सुरक्षा का भी प्रयास किया जाता है। सर्दी-गर्मी आदि प्रतिकूलताओं से शरीर को बचाने के लिए व्यक्ति प्रयासरत रहता है। व्यक्ति को आत्मसुरक्षा का सलक्ष्य प्रयत्न करना चाहिए। व्यक्ति बाहर की दुनिया में अधिक जीता है। वह क्षण धन्य होगा, जब व्यक्ति आत्मरमण करे।'

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'जैन शासन विजयी बने। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन शासन को विकासशील बनाने एवं उसकी प्रभावना में महत्त्वपूर्ण सेवाएं दी हैं।' आचार्यवर ने जैन शासन विकास मंच की अवधारणा एवं उसके पांच सूत्रों की अवगति व व्याख्या प्रस्तुत करते हुए कहा--'सम्प्रदायों में विद्वेष का भाव नहीं, पवित्र व उच्च भाव रहे।'

आचार्यवर ने कहा--'समन्वय के भावुक वातावरण में भी अपनी-अपनी मर्यादा के पालन के प्रति जागरूकता रहे। मूल में भूल न हो। सौहार्द का आधार स्वार्थपरक होने से वह कल्याणकारी नहीं हो सकता। सौहार्द के नाम पर किसी की भूल को छिपाना उपयुक्त नहीं है। वास्तविक सौहार्द वह है जो एक-दूसरे की कमजोरी को बताए, किन्तु उसे बताने में विधायक भाव रखे। जैन शासन की प्रभावना हेतु हम आर्षवाणी के प्रसार के लिए यथोचित प्रयास करें। जैनविद्या का प्रचार हो।'

पूज्य आचार्यवर ने प्रसंगवश कहा--'बीकानेर के मूलचन्दजी बोथरा तेरापंथ विकास परिषद के सात सदस्यों में एक हैं। ये अच्छे त्यागी श्रावक हैं। इन्होंने गुरुदेव तुलसी, गुरुदेव महाप्रज्ञ की सेवा की है। आज इतनी अवस्था में भी काफी सक्रिय हैं। इनके परिवार में मुझे अच्छे संस्कार देखने को मिले। न केवल पुत्रों के अपितु पुत्रियों के परिवारों में भी अच्छी धर्म भावना लग रही है। इनके ज्येष्ठ पुत्र सुरेन्द्रजी बोथरा एक धनाढ्य व्यक्ति हैं। अच्छा व्यवसाय है। धन कोई बड़ी बात नहीं है, बड़ी बात है संयम और संस्कारों की। इनके जीवन के बारे में ज्ञात किया तो मुझे लगा कि इनका जीवन काफी अच्छा जीवन है। सुरेन्द्रजी अच्छे श्रावक हैं। जिन परिवारों पर सात्विक आह्लाद का अनुभव किया जा सके, उन कुछ परिवारों में एक इनका परिवार है। मूलचन्दजी वयोवृद्ध, कुछ अंशों में अनासक्त चेतना वाले और गुरुदेव द्वारा 'शासनसेवी' के रूप में संबोधित हैं। आज मैं **इनके पुत्र सुरेन्द्रजी बोथरा को शासनसेवी के रूप में स्वीकार करता हूं।** गुरुदेव तुलसी के जीवन के अन्तिम दिन की सुबह इनके बोथरा हाउस में बीती। इनके भवन को छोड़ने के थोड़ी देर बाद गुरुदेव तुलसी दिवंगत हो गए। तो क्यों नहीं गुरुदेव को आप वहीं रख लेते।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने **श्री पुखराजजी परमार (मगरतलाव-चेन्नई)** की सेवाओं का उल्लेख करते हुए उन्हें **'शासनसेवी'** के रूप में स्वीकार करते हुए कहा--'पुखराजजी परमार चेन्नई के हैं। मैंने देखा ये सेवा भावना वाले श्रावक लगे। शेषकाल में रास्ते की कई वर्षों से सेवा करते हैं। चतुर्मास में संघ लाते हैं। शासनस्तंभ मुनि घासीरामजी स्वामी से इनके पिता ने तत्त्वज्ञान समझा था। पुखराजजी इसी तरह सेवा करते रहें।'

मुनि रजनीशकुमारजी ने नववर्ष के संदर्भ में गीत का संगान किया। हरियाणा प्रान्त के विभिन्न क्षेत्रों से समागत प्रतिनिधियों की ओर से मास्टर नंदकुमारजी ने हरियाणा प्रवास के दौरान अधिक से अधिक कार्यक्रम प्रदान करने की प्रार्थना की। तारानगर के लगभग एक सौ लोगों के संघ की ओर से भावपूर्ण गीत की प्रस्तुति के बाद श्री मिलाप बोथरा ने क्षेत्र स्पर्शना का निवेदन किया। श्री भीकमचन्द

नखत ने टमकोर पधारने की अर्ज की। श्री सुखराज सेठिया ने नववर्ष प्रवेश के अवसर पर होने वाले वृहद् मंगलपाठ व प्रवचन के सीधे प्रसारण की जानकारी दी। पूज्य आचार्यवर ने कहा--'लाडनूं चतुर्मास सन २०१३ और दिल्ली चतुर्मास सन २०१४ के मध्य तारानगर, राजगढ़, सादुलपुर, चूरू और टमकोर--इन क्षेत्रों में जाना पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के कारण संभव नहीं है।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पूज्यप्रवर द्वारा नवीन घोषणाएं

- बीदासर में २८ नवम्बर २०१३ में होने वाला दीक्षा समारोह यथासंभव वृहत् दीक्षा समारोह करने का भाव है। भगवान महावीर के दीक्षा कल्याणक दिवस पर आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष में यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व मुख्य दीक्षा समारोह माना जा सकेगा।
- सन् २०१४ के मर्यादा महोत्सव के संदर्भ में गंगाशहर में २२ जनवरी २०१४ से १३ फरवरी २०१४ तक तथा बीकानेर में १५ जनवरी २०१४ से २१ जनवरी २०१४ तक प्रवास करने का भाव है।
- सन् २०१४ में भीनासर में यथासंभव दीक्षा समारोह करने का भाव है।
- सन् २०१४ का अक्षयतृतीया समारोह हरियाणा के सिरसा में करने का भाव है।
- सन् २०१४ में वैशाख शुक्ला नवमी (आचार्य महाश्रमण जन्मदिवस) वैशाख शुक्ला दशमी (आचार्य महाश्रमण पदाभिषेक दिवस) तथा वैशाख शुक्ला चतुर्दशी (आचार्य महाश्रमण दीक्षा दिवस) के कार्यक्रम हरियाणा में करने का भाव है।
- सन् २०१४ में परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का वार्षिक महाप्रयाण दिवस का कार्यक्रम (आषाढ़ शुक्ला तृतीया) दिल्ली में करने का भाव है।

सन् २०१२ में परमपूज्य आचार्यवर द्वारा प्रदत्त विशिष्ट संबोधन

शासनसेवी

१. श्री बाबूलाल कच्छारा (रीछेड़-मुम्बई)
२. श्री पुखराज परमार (मगरतलाव-चेन्नई)
३. श्री सुरेन्द्र बोथरा (बीकानेर)

तपोनिष्ठ श्रावक/श्राविका

१. श्री सोहनराज बुरड़ (जसोल-सूरत)
२. श्रीमती धर्मीदेवी तलेसरा (बालोतरा)
३. श्रीमती दिवालीदेवी बुरड़ (बालोतरा-इरोड)
४. श्रीमती कंचनबाई गेलड़ा (बोरावड़-शहादा)
५. श्रीमती वरजूदेवी बालड़ (बालोतरा)

महादानी श्रावक/श्राविका

१. श्री बच्छराज चोरड़िया (टमकोर-राजामुन्द्री)
२. स्व.श्री मूलचन्द सामसुखा (रायसर-बुरहानपुर)
३. श्री मदनलाल छाजेड़ (समदड़ी)
४. श्री सोहनलाल सालेचा (जसोल)
५. श्रीमती अनुदेवी सालेचा (जसोल)
६. श्रीमती भीखीदेवी सेठिया (मोमासर-जयपुर)
७. श्रीमती धर्मीदेवी छाजेड़ (समदड़ी)

श्रद्धानिष्ठ श्रावक

१. श्री अचलचन्द बोकड़िया (जसोल-हिरियूर)
२. श्री अर्जुनलाल चावत (सरेवड़ी-बेंगलुरु)
३. श्री अशोककुमार डूंगरवाल (राजसमन्द)
४. श्री बाबूलाल बोकड़िया (जसोल)
५. श्री बच्छराज पारख(चूरू-चेन्नई)
६. श्री बालचन्द बोथरा (बीदासर-कोलकाता)
७. स्व.भंवरलाल बैंगानी (बीदासर-दिल्ली)
८. श्री भंवरीलाल छल्लाणी (अरणी-महाराष्ट्र)
९. श्री भेरूलाल संकलेचा (पाली)
१०. स्व.भंवरलाल बाबेल (बागोर-भीलवाड़ा)
११. श्री चांदमल मेहर (कुकरखेड़ा-रायगढ़)
१२. श्री चम्पालाल बागरेचा (पारलू)
१३. स्व.चन्दनमल बुरड़ (जसोल)
१४. श्री चन्द्रभान जैन (हांसी)
१५. स्व.छगनराजजी तातेड़ (जोधपुर)
१६. श्री छगनराज पालगोता (टापरा)
१७. श्री देवराज ढेलड़िया (जसोल-गांधीधाम)
१८. श्री डूंगरचन्द वडेरा (जसोल)
१९. श्री डालचन्द कोठारी (रींछेड़-मुम्बई)
२०. श्री करणलाल चींपड़ (लावासरदारगढ़-चेन्नई)
२१. श्री किशनलाल डागलिया (कोशीवाड़ा-मुम्बई)
२२. श्री लालचन्द कोठारी (गंगाशहर)
२३. श्री मानमल नाहटा (बालोतरा)
२४. स्व.मोहनलाल सेठिया (देवगढ़ मदारिया)
२५. श्री मोतीलाल एम.गांधी मेहता (जसोल)
२६. श्री मांगीलाल बालड़ (भीमड़ा)
२७. श्री मांगीलाल झाबक (पीथास-सूरत)
२८. श्री माणकचन्द बैद (सरदारशहर)
२९. श्री मीठालाल सालेचा (जसोल-मुम्बई)
३०. श्री मूलचन्द चौपड़ा (गंगाशहर)
३१. श्री निर्मल कोठारी (लाडनूं-अहमदाबाद)
३२. स्व.ओमप्रकाश जैन (भिवानी)
३३. श्री पुखराज दक (कूकरखेड़ा-भीम)
३४. स्व.आर.चांदमल डूंगरवाल (दीवेर-मुम्बई)
३५. स्व.राजमल सिंघवी (आशाहोली)
३६. स्व.रणजीतमल गादिया (पेटलावद-इन्दोर)
३७. श्री राणमल छाजेड़ (जसोल)
३८. श्री सोहनलाल बाफना (राशमी)
३९. श्री धनराज ओस्तवाल (बालोतरा)
४०. स्व.धनपतसिंह जैन (हिसार)
४१. स्व.धनपत सुराणा(कांकरिया-मणिनगर)
४२. श्री गुलाबचन्द चौपड़ा (बाड़मेर)
४३. श्री गणपतलाल सिंघवी (आशाहोली-मुम्बई)
४४. श्री गौतमचन्द एम.भंसाली (जसोल-मुम्बई)
४५. श्री गौतमचन्द मांडोत (जसोल-बालोतरा)
४६. स्व.घीसूलाल कोठारी (केलवा)
४७. श्री घेवरचन्द गांधी-मेहता (बालोतरा)
४८. श्री हंसराज लूणिया (तारानगर)
४९ श्री हरकचन्द भंडारी (पेटलावद)
५०. श्री हनुमानमल छाजेड़ (रासीसर-जलगांव)
५१. श्री जवेरीलाल रांका (बालोतरा)
५२. स्व.जुगराज बम्बोली (रानी-मुम्बई)
५३. स्व.जेठमल कोठारी (कामठी-इन्दोर)
५४. श्री जेठमल नाहटा (गंगाशहर)
५५. श्री खूबचन्द भंसाली (जसोल)
५६. श्री खीमराज सालेचा (बाड़मेर-सूरत)
५७. श्री कानजीभाई संघवी (गांधीधाम)
५८. श्री कन्हैयालाल भंसाली (नोखा-बरपेटा)
५९. स्व.लाभचन्द सुराणा (सादुलपुर-कोल.)
६०. श्री मेघराज महनोत (उदासर-भीलवाड़ा)
६१. श्री महेन्द्रकुमार तातेड़ (जसोल)
६२. श्री मोहनलाल गोगड़ (बालोतरा)
६३. श्री मोतीलाल एस.गांधी मेहता (जसोल)
६४. श्री मांगीलाल छाजेड़ (गंगाशहर)
६५. श्री मांगीलाल सिंघवी (असाडा)
६६. श्री माणकचन्द सालेचा (जसोल)
६७. श्री मीठालाल ओस्तवाल (मिंजूर)
६८. श्री मुकेश जैन (तोसाम)
६९. स्व.नानालाल खिमावत (उदयपुर)
७०. श्री पारसमल संकलेचा (पचपदरा-अह.)
७१. श्री पूनमचन्द डागा (सरदारशहर)
७२. स्व.रामेश्वरदास जैन (हिसार-करनाल)
७३. श्री राजकरण छल्लाणी (गंगाशहर)
७४. श्री रणजीतसिंह चोरड़िया (सुजानगढ)
७५. श्री रतनलाल सुराणा (नोखा-जलगांव)
७६. श्री सुमेरमल पारख (चूरू-चेन्नई)

७७. श्री सवाईचन्द कोचर (फलसूंड)
७८. श्री स्वरूपचन्द कोचर (फलसूंड)
७९. श्री सूरजकरण दूगड़ (सरदारशहर)
८०. श्री सूरजमल घोसल (राजलदेसर)
८१. श्री सुरेशकुमार भंसाली (जसोल)
८२. श्री बच्छराज बांठिया (चूरू-सूरत)
८३. स्व.श्री तोलाराम बोथरा (श्रीडूंगरगढ़)
८४. श्री तोलाराम सामसुखा (गंगाशहर)
८५. श्री वीरचन्द लोढ़ा (अमलनेर)
८६. श्री लक्ष्मीनारायण जैन (टिटलागढ़-नवरंगपुर)
८७. श्री चम्पालाल गोगड़ (बालोतरा)

श्रद्धा की प्रतिमूर्ति

१. श्रीमती अमरावदेवी घोड़ावत (लाडनूं-दिल्ली)
२. श्रीमती आशादेवी बैद (गंगाशहर)
३. श्रीमती अणचीदेवी गांधीमेहता (जसोल)
४. स्व.श्रीमती अणचीदेवी बैंगानी(बीदासर-कोलकाता)
५. श्रीमती अणसीदेवी वडेरा (टापरा)
६. श्रीमती अणसीदेवी गोलेच्छा (जसोल)
७. श्रीमती अनीतादेवी सिंघवी (असाडा)
८. श्रीमती बदामीदेवी बोकड़िया (जसोल-हिरियूर)
९. श्रीमती बसंतीदेवी मेहता (आमेट-मुम्बई)
१०.स्व.श्रीमती वक्सूबाई बिनायकिया (मजल-जोधपुर)
११. श्रीमती बक्सूदेवी बालड़ (बायतू-पाली)
१२. स्व.श्रीमती चम्पादेवी हिरण (आमेट-मुम्बई)
१३. स्व.श्रीमती चंपादेवी संघवी (वाव)
१४. श्रीमती इन्द्राणीदेवी जैन (फतेहाबाद)
१५. स्व.श्रीमती छाऊदेवी खाब्या (भीलवाड़ा-अहमदा.)
१६. श्रीमती छगनीदेवी कोचर (फलसूंड)
१७. श्रीमती छायादेवी बोथरा (बीदासर-कोलकाता)
१८. श्रीमती देवीबाई गोलेच्छा (बाड़मेर)
१९. स्व.श्रीमती दयावंती जैन (जैतो)
२० स्व.श्रीमती धापूदेवी दूगड़ (सर.-अहमदाबाद)
२१ श्रीमती गौरांदेवी छाजेड़ (रासीसर-जलगांव)
२२. स्व.श्रीमती गट्टूदेवी सिंघी(श्रीडूंगरगढ़-बेंगलुरु)
२३. श्रीमती इन्द्रादेवी सालेचा (बालोतरा-अहमदाबाद)
२४. श्रीमती ईचुदेवी बैद (हैदराबाद)
२५. श्रीमती जेठबाई सिसोदिया (रायपुर-मुम्बई)
२६. श्रीमती जमनादेवी बालड़ (बायतू-बालोतरा)
२७. श्रीमती जसोदादेवी भंसाली (जसोल)
२८. श्रीमती जतनदेवी छल्लाणी (गंगाशहर)
२९. स्व.श्रीमती झंकारबाई संचेती (भेसाणा-सिकन्द्रा.)
३०. स्व.श्रीमती कान्तादेवी बड़ोला (राजसमन्द)
३१. स्व.श्रीमती कमलादेवी चौपड़ा(पचपदरा-जोधपुर)
३२. श्रीमती कमलादेवी गोठी (टापरा)
३३. श्रीमती कमलादेवी गोठी (सरदारशहर-जयपुर)
३४. श्रीमती बेबीदेवी सालेचा (बाड़मेर-सूरत)
३५. स्व.श्रीमती बुग्गीदेवी डागा (सरदारशहर)
३६. श्रीमती भीखीदेवी चौपड़ा (पचपदरा)
३७. श्रीमती भूरीबाई लोढ़ा (आमेट-मुम्बई)
३८. स्व.श्रीमती भंवरीदेवी बोथरा (गंगाशहर)
३९. श्रीमती भंवरीदेवी चोरड़िया (नोखा-जलगांव)
४०. श्रीमती भंवरीदेवी तलेसरा (जसोल-सूरत)
४१. श्रीमती चन्दादेवी रांका (बालोतरा)
४२. श्रीमती चुकीदेवी चौपड़ा (पचपदरा)
४३. स्व.श्रीमती चुकीदेवी तलेसरा (बालोतरा)
४४. श्रीमती किरणदेवी धोका (पाली)
४५. श्रीमती किरणदेवी कोठारी (गंगाशहर)
४६. श्रीमती कुसुम चोरड़िया (सुजान.-कोल.)
४७. श्रीमती खमादेवी जीरावला (समदड़ी-सूरत)
४८. श्रीमती लक्ष्मीदेवी कोठारी (रींछेड़-मुम्बई)
४९. स्व.श्रीमती लक्ष्मीदेवी हिंगड़ (आमेट)
५०. स्व.श्रीमती लक्ष्मीदेवी कोठारी (बीकानेर)
५१. श्रीमती लाडदेवी बाफना(भाणा-मुम्बई)
५२. श्रीमती लूणीदेवी तातेड़ (जसोल-मदुरै)
५३. श्रीमती लीलादेवी सालेचा (जसोल-मुम्बई)
५४. स्व.श्रीमती लीलादेवी भंसाली (अहमदाबाद)
५५. श्रीमती लीलादेवी नाहटा (गंगाशहर)
५६. श्रीमती माणकदेवी लूणिया (तारानगर)
५७. स्व.श्रीमती मणिबेन डोसी (फतेहगढ़-भुज)
५८. श्रीमती मणिबेन संघवी (गांधीधाम)
५९. श्रीमती मांगीदेवी भंसाली (बालोतरा)
६०. श्रीमती मांगीदेवी ढेलड़िया (समदड़ी-मुम्बई)
६१. श्रीमती मांगीदेवी पालगोता (टापरा-बालोतरा)
६२. श्रीमती मनोहरीदेवी आंचलिया (गंगाशहर)
६३. श्रीमती मनोहरीदेवी कोठारी (लाडनूं)
६४. श्रीमती मोहिनीदेवी जीरावला (समदड़ी)
६५. स्व.श्रीमती मोहनीदेवी कोटेचा (बोरावड़)
६६. श्रीमती मोहिनीदेवी पारख (सिरसा-आगरा)

६७. श्रीमती कमलादेवी बोकड़िया (जसोल)
६८. श्रीमती कमलादेवी गुप्ता पोरवाल (उदयपुर)
६९. श्रीमती कमलादेवी धोका (पाली)
७०. श्रीमती कमलादेवी भंसाली (नोखा-बरपेटा)
७१. श्रीमती कमलादेवी ओस्तवाल (बालोतरा)
७२. श्रीमती कमलाबाई मेहता (मजेरा-मुम्बई)
७३. श्रीमती कमलेशदेवी जैन (तोशाम)
७४ श्रीमती केसरदेवी बालड़ (भीमड़ा)
७५. श्रीमती कैलाशदेवी ढीलीवाल (चित्तौड़गढ़)
७६. श्रीमती कौशल्यादेवी सुराणा (नोखा-जलगांव)
७७. श्रीमती कंचनदेवी सुराणा (तारानगर-कोलकाता)
७८. श्रीमती कंचनबाई गेलड़ा (बोरावड़- शहादा)
७९. स्व.श्रीमती नारंगीदेवी गादिया (राणीस्टेशन)
८०. श्रीमती पारसीदेवी बांठिया (पाली)
८१. श्रीमती पानीदेवी वडेरा (बालोतरा)
८२. श्रीमती पानीबाई गादिया (गुड़ारामसिंह-चिक.)
८३. श्रीमती पानीदेवी सुराणा (रासीसर)
८४. श्रीमती पुष्पादेवी सालेचा (जसोल)
८५. श्रीमती पुष्पादेवी चौपड़ा (गंगाशहर)
८६. श्रीमती पुष्पादेवी लोढ़ा (अमलनेर)
८७. श्रीमती प्यारीदेवी मांडोत (जसोल)
८८. श्रीमती पिंकी बोथरा (बरपेटारोड)
८९. श्रीमती रेंवतीदेवी छाजेड़ (गंगाशहर)
९०. श्रीमती रेशमीदेवी संकलेचा (पाली)
९१. श्रीमती रेशमीदेवी संचेती (मोमासर)
९२. स्व.श्रीमती रतनीदेवी बरमेचा (तारा.-अहम.)
९३. श्रीमती सरोजदेवी तातेड़ (जसोल)
९४. श्रीमती सरजूदेवी सालेचा (जसोल)
९५. श्रीमती संतोषदेवी गुगलिया (लसाड़ियाखुर्द)
९६. श्रीमती संतोकीदेवी बैंगानी (बीदा.-गाजियाबाद)
९७. श्रीमती संतोषदेवी मूथा (ब्यावर-चेन्नई-दुबई)
९८. श्रीमती संगीतादेवी सामसुखा (सरदारशहर)
९९. श्रीमती सुनीता कोठारी (लाडनूं-अहमदाबाद)
१००. श्रीमती सुमनदेवी छाजेड़ (सूरत)
१०१. श्रीमती सुन्दरदेवी जीरावला (समदड़ी-कोप्पल)
१०२.श्रीमती सुन्दरदेवी बैदमूथा (बालोतरा)
१०३.स्व.श्रीमती सुन्दरदेवी चोरड़िया (छापर-कोल.)
१०४.श्रीमती सुन्दरदेवी तातेड़ (जसोल)
१०५ स्व.सुन्दरदेवी पालगोता (टापरा-सूरत)
१०६. श्रीमती अणचीदेवी ढेलड़िया(जसोल-गांधीधाम)
१०७. श्रीमती अणचीदेवी छाजेड़(कवास-बालोतरा)
१०८. श्रीमती मोहनदेवी चावत(राजाजीकाकरेड़ा)
१०९. श्रीमती मोहनदेवी संकलेचा (जसोल)
११०. श्रीमती मोहनीदेवी गांधीमेहता (जसोल)
१११. श्रीमती मोतीबाई डागलिया(कोशी.-मुम्बई)
११२. श्रीमती मीना डागलिया (कोशीवाड़ा-मुम्बई)
११३. श्रीमती मंजुदेवी भंसाली (जसोल-मुम्बई)
११४. श्रीमती मैनादेवी सेठिया (सादुलपुर-शिलोंग)
११५. श्रीमती मैनादेवी डागा (सरदारशहर)
११६. श्रीमती मीरादेवी चौपड़ा (पारलू-बालोतरा)
११७. श्रीमती मूलीदेवी वडेरा (जसोल)
११८. श्रीमती नारायणीदेवी कोचर (फलसूंड)
११९. स्व.श्रीमती निर्मलादेवी जैन (मुजफ्फरनगर)
१२०. श्रीमती सुशीलादेवी भंसाली (जसोल)
१२१. श्रीमती सुशीलादेवी वडेरा (जसोल)
१२२. श्रीमती सुशीलादेवी दूगड़ (सरदारशहर)
१२३. श्रीमती सुवटीदेवी जीरावला (असाडा)
१२४. श्रीमती सुवटीदेवी ढेलड़िया (जसोल-गांधी.)
१२५. श्रीमती सुआदेवी सुराणा (पारलू-अहमदा.)
१२६. श्रीमती सुआदेवी कोचर (फलसूंड)
१२७. स्व.श्रीमती सुमेरीदेवी आंचलिया (गंगाशहर)
१२८. श्रीमती सोनादेवी दूगड़ (सरदारशहर)
१२९. श्रीमती सोसरबाई बाबेल (मुरोली-चित्तौड़गढ़)
१३०. श्रीमती सोसरबाई ओस्तवाल (गिलूंड)
१३१. श्रीमती सीरूदेवी सिंघी (रतनगढ़)
१३२. श्रीमती सीरूदेवी नौलखा (सर.-सिकन्द्राबाद)
१३३. श्रीमती शांतिबाई सेमलानी (रानी-मुम्बई)
१३४. श्रीमती शांतिदेवी संकलेचा (पचपदरा-अह.)
१३५. श्रीमती शांतिदेवी धोका (पाली)
१३६. श्रीमती शान्तिदेवी ओस्तवाल (मिंजूर)
१३७. श्रीमती उमरावदेवी बागरेचा (जसोल)
१३८. श्रीमती उमरावदेवी ढेलड़िया (जसोल)
१३९. श्रीमती बदामीदेवी बाफना (बालोतरा)
१४०. श्रीमती बिदामीदेवी वडेरा (टापरा)
१४१. स्व.श्रीमती बिदामबाई गादिया (गुड़ारामसिंह)
१४२. श्रीमती विजयादेवी कुंडलिया (सरदारशहर)
१४३. श्रीमती विमलादेवी चौधरी (आमेट-मुम्बई)
१४४. श्रीमती विमलादेवी भंसाली (जसोल)
१४५. श्रीमती विमलादेवी जैन (फतेहाबाद)
१४६. श्री वरदीबाई बाबेल (ठीकरवासकलां-चेन्नई)
१४७. श्रीमती मीरादेवी बैद (गंगाशहर-दिल्ली)

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 5-1-2013 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

कल्याणमित्र/कल्याणमित्रा

१. श्री उग्रसेन जैन (फतेहाबाद) २. श्रीमती कार्ला ग्रीड्स'करुणा' (जर्मनी)

संबोधन-अलंकरण समारोह : एक अनुरोध

परमपूज्य आचार्यप्रवर द्वारा इस वर्ष संबोधन प्राप्त श्रावक-श्राविकाओं को जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा टापरा में पूज्यवर की पावन सन्निधि में १४ फरवरी २०१३ को आयोजित विशेष समारोह में सम्मानित किया जाएगा। इस सन्दर्भ में १३ फरवरी २०१३ को अपराह्न में एक मिलन संगोष्ठी भी समायोज्य है। संबोधन प्राप्त महानुभावों और उनके परिजनों से अनुरोध है कि अब तक जिन्होंने संबोधन प्राप्तकर्ता का परिचय एवं फोटो महासभा के केन्द्रीय कार्यालय को प्रेषित नहीं किया है, वे अतिशीघ्र परिचय एवं फोटो महासभा के कोलकाता कार्यालय को प्रेषित कर दें। इस संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नं. ९३३१०१४४७२ पर सम्पर्क किया जा सकता है। टापरा में आवास व्यवस्था हेतु मोबाइल नं. ९४१३५०७४०७ व ९५७१३३३४०० पर सम्पर्क किया जा सकता है।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

११०००/- स्वर्गीय प्रतीक दूगड़ (सुपौत्र-स्व.गणेशमलजी एवं श्रीमती सिरेकुमारी दूगड़, सुपुत्र-श्रेयस-ममता दूगड़, अहमदाबाद-मेलबोर्न-आस्ट्रेलिया) की स्मृति में सौरभ, राहुल, अपेक्षा दूगड़ द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व.राजकुमार बैद(सुपौत्र-स्व.धनराजजी बैद, सुपुत्र श्री गजराज-कमलादेवी बैद, लाडनूं-दिल्ली-नौगांव) की स्मृति में कमलसिंह-सायरदेवी, कुलदीप, अंकित बैद द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व.श्रीमती छाऊदेवी खाब्या (धर्मपत्नी-अणुव्रतसेवी श्री रतनलाल खाब्या, भीलवाड़ा-अहमदाबाद-हैदराबाद) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू भोपालसिंह-पारसदेवी, राजेन्द्रकुमार-निर्मलादेवी, हस्तीमल-वनितादेवी, सुपौत्र व पौत्रवधू अमित-आशा, उत्कर्ष, दीपांशु, अभिषेक, सुपौत्री युक्ति, प्रपौत्री विहा खाब्या द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री गौतमचन्द मोहनलाल भंसाली को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' एवं मंजुदेवी गौतमचन्द भंसाली को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने व सुपुत्री मुमुक्षु भावना भंसाली की जसोल में जैन भागवती दीक्षा के उपलक्ष्य में गौतमचन्द, किशोरकुमार, मुदित, चिराग, यश भंसाली, जसोल-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

साध्वी सोहनांजी (छापर) द्वारा अनशन ग्रहण

सुनाम (पंजाब) में प्रवासित साध्वी सोहनांजी (छापर) ने १७ दिसम्बर २०१२ को तिविहार अनशन और ३१ दिसम्बर २०१२ को चौविहार अनशन स्वीकार किया है। संवाद लिखे जाने तक साध्वीश्री का अनशन प्रवर्द्धमान है।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा,
पो. टापरा-३४४ ०२३ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ९६८००५५३८१, ९३५२४०४६४१

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**